

श्रीमहोपाध्यायनमः॥ ॥ आकाशो हित जोधिया सब कला चंडे वोलाया तां हं मलिमुख गरि दुंदु क
र जोरि डुन्डोत गन्धा पत्र माहा ॥ हे बुद्धाति मिजाउ समुद्र तिर ना विनि लग वाताहा सा
हं कार्य मु ग्यो फिरा उ चरमा त्या काम कृत न्को ज्ञा हं ॥ १८ ॥ सति वचन मुनि गदा तत्रा
ह्य एह रु विनि गन्धा क जोरि जग्गै सां गप भयो त जा उ म युग फि न्या हो चंडे गरी ॥ ब्राह्म
ण को विन ति सु नीत भ गदा खु सि भया उ स चरि मामा जी उ को कया ह वो स हा मि क न
फि न्ने छ द शं न गरि ॥ १९ ॥ ज मुना काति रं दे वि रु छ म जी च ल्या छि ए मा हा त जों दा भ या
शे र वै च क्र च तु भ र्जा वि च धरि ठो का उ घा दा भ या ॥ चो द न मु षि दे न्य का वि र ह रु अ
घी ष डा भै र ह्या मु ष्कि वा न गरि प छारि वि र लाई सारि त मि त्रै ग या ॥ २० ॥ द हि वे च

भा. श्लो. नभनि गया त ग्वालिनिरु पुण्याम थुरे मां हों सो धागर्त भनि वडा हर कले चाडे दुगु च्या
तां हों ॥ सो ध्या श्रीवल भद्र कृष्ण विरले वसिष्ठ तम्रो कां हों कस्का ग्वालिनि होति मिम
नि सो ध्या सो धाता है न जां हों ॥ १८ ॥ ग्वालिनि जव दोस्त लगि हरिका अगाडि सरे दे
पार्वन्दुं दावडा विरह लेकं सदु हाई गरि ॥ दोडि जल दिफिरा डरि हजूर मासुं देता विंति
गरि राजा कंश का ग्वालिनि सब जना सरं पया उ स घा रि ॥ १९ ॥ मालिनि फुल गां थिल्या
ई हरिका पुगिन गिचै महं ठोका भित्र पशिक न देखि न दान दान व व स्या का जा हा ॥
कस्को हो फूल कमल को भनि सो ध्या जाई पु न्या उं द्यो कां हों एति फूल दिई जा उ हा
मिला उ शिर मा भनि समाया वा हा ॥ २० ॥ मालिनिका ठाकिया सेत फुल धो स्या रु दे त ना

लिनि गया पुण्या कं स जां हों थियो मरुल मा नारान्का चुक्कि कहा ॥ ए सो धुं सग यो बहुत
फुल रु पो गु हा र्द उ वे ला प यो मालिनिका सम चार मा सब जना अन्न न मानि र ह्या ॥ २१ ॥
॥ घोरि चन्दन कंश कान गर मा प्राते कु वि जा गई देखि श्रीवल भद्र कृष्ण विर लाई दंडो
त ग दि भई ॥ श्री कृष्ण प्र कट् भया भनि वामि चंदन च रु उं दे रहि तस्को मुक्ति भयो त
स समय मा सदा अ जं म्व र्ग रि ॥ २२ ॥ राजा कं स विनो डरि मरुल मा पा शा त पे लो ता
हा दे ध्यो कृष्ण जी लाई पटां गिनि महं मु छी प यो छि न्म हा ॥ भा उा को दर्शन भयो
मेरो पति रह्यो भनि त जो यो वा हा प न्ने व हा ण सा य मा गरी क न ड न्दो त ल गा यो ता हा
॥ २३ ॥ कंश सुर वीर मलि नु ख गरि विनि ग यो क जी रि मेरो राज र हो स्र जिय भरि भ

भा. स्तो. न्योतयाउ परि॥ रिस्रथियो कृष्णका मनमारा ससे होत मो गति मारि कंश पछारि फालि
 जीमिमा वा जा चल्या नो मति॥ ८५॥ राजा कंश मन्यो जिमि न लप न्यो मत्पुक्ता ताहिर होत
 स्को प्राणा हरं हुंदा मुलुक मा वा जित्र मंगल भयो॥ शत्रू कृष्णजिको मन्यो तव ठिया क
 तिनारा न कोर हो जपूछ शयुनि जों शदा हरिकन अ पूर्व दर्शन भयो॥ ८६॥ मारि कं
 शको बुंश पारि हरिले मस्तक उतारि लिया फोया बन्धन उग्र सेन नृपकारा न्या भिषे के
 दिया॥ पीता श्री वसुदेव देव कि हरु सदा सकृत्मा थिया तन को दुःख हरं ग न्या पुरुष
 ले प्रद सद दर्शन दिया॥ ८७॥ सा धुसन्नन को परस्पर भयो जो न्या तत नो बाह दिव्ये वा रु
 वंश का विच माहा दर्श दिलायो जाहा॥ शत्रू को जिय बद्ध गयो कि न माहा कति वयो

राम

२

न मर्हा॥ ८८॥ नारि जति कं कंश काम हल मा विला पग दे र ह्या गुह मी गन भनि वडा विरह
 ले पिता पुका दे गया॥ स्वामिको परलोक भयो मधु रामा रुदै पिता के क ह्या अर्जुन कृष्ण
 दुहाई फियो मुलुक मा भनि त विस्तार के ह्या॥ ८९॥ कोरि को अर्जि सु न्यो वरु तरि श ले ग
 ज्यो त सा के गरि जो रा सिंधु पो हुं म मा ह्ये क्षि ए मा भनि उ ह्यो उ स घरि॥ ते ई स क्षो णि को उ
 ज लियो स ग माहा ल डई दि यो वे स गरि वा न वान ले छे द ग न्या पुरुष ले र सिल डई परि
 ॥ ९०॥ र स्तो जु म्य दि यो व डो रि स गरि वा न मा र्थ्य र थ मा च ठि वान्का शब्द अ वा ज ले गरि
 कन मुलु का हा हा परि॥ वर्षा आव एा का अ घो र त ल मा ल डई ग न्यो कि न घरि ते
 ई स क्षो णि स वा ग न्या छि एा मा हा फि न्या त व डई गरि॥ ९१॥ जो रा सिंधु अधि स रि रु र दि

भा. स्तो. दियो समस्तारि सले गरि देष्यो श्रीवलभद्र विरलाई रुमदादियो उरधरि वानू वा नू को
 अधिजुरु भयो छिन घरि पछि तमु दू किपरि जोरा सिंदु ह ल्यो तसे समय सा ग ग मा वंध
 परि ॥ ९२ ॥ कंठा सुरम यो भनि नगर मा कालिद मनले सुन्यो सुता सो ग गरि मलि कन भ
 इवु छिता मत्ता गुन्यो । मंत्रि छं विर का जति सग मा हात लाई भंदो भयो जु छे मा श्री कछ
 लाई म मा छु छिन मा भनि तर ति घो ल्यो ॥ ९३ ॥ भारि फोद गरि तयार्क न भयो जल दित
 कालि गयो वडो ग र्व गरि हरि कत भन्यो लडा को ई छा कछो ॥ जोत न्नो मन सु पूजति छ
 जुरु मा घ जित गरि क्या भयो एति हाक गरि वडा हर कले सं ग्रा म गर्दो भयो ॥ ९४ ॥
 वि वि र का एति जु छे ले गरि कन सात दि न वि ता पा तों हें चं के वा ए फि यो वडा सा म

राम
 ३

ले प छित कं पितों हें ॥ ना सु ले मन मा वि चार्क न ग य्या म रं द्र स स्को का हें भा गि दो डि
 ग या वडा वन मा हा नु च क द व स्था जा हें ॥ ९५ ॥ कालि ले श्री कछ का प छि पा छि
 वडो द पे टा दियो भारि दं न ग रा गरि क न ग या ना रां को प्रे दा लियो ॥ अ फु तिं ह
 स वारि भो छु मि छु मि व डो ल डा ई दियो जित वा जि ग रु ला भनि मन मा हा अ तं त वं
 च ल् धियो ॥ ९६ ॥ दे ष्या कालि द मन वडा गर व ले म न्ता भया को ता हात स्को का ल धि
 यो को हि दिन मा मु च्च क न्द का हात मा ॥ ए ति प्र म्म गरि ना रा य ए ग या मु च्च क न्द का
 सा थ मा श्रु पी त पी ता म्भ रि के र दियो गु फा प स्या रा त मा ॥ ९७ ॥ काली वी र वडो प
 रा क्क नी धियो अधि सरि हा क दियो व ले मा श्री कछ रु भनि चि ह्यो मा र्ता को म

भा. श्लो.

४

मुपलियो ॥ लान्निवाण गरि अधिसरिगयो मुचकन्दतां हि थिया धोल्या नेत्र न ज दि या त
पसिले काली घरा निभयो ॥ ८५ ॥ म न्यो कालि दमन से समय मा मुचकन्द का वान ले अघो
शब्द भई जिमि तल प न्यो सव सुन्या कान ले ॥ मेरा नेत्र महा सघा प कन भयो का गर्छ त
रुपान ले गु फा मान रु प्रभूति मि भानि क ह्या सहि चान ले ॥ ८६ ॥ जो धा कालि दम म न्यो भनि
क ह्या मुचकंद ता हि र ह्या शंखे वक्र प्रगट ग या छि न मा हा नारा नू ता सामे ल भ या ॥ देखा
मुचकंद ले हरि कन वस्त्रे चला उदा भ या कालि को जिय वध गरि हर क ले नारा न गोकु ल
ग या ॥ ९० ॥ रु क मिनी श्री सत भा मा नि प्रसा भ डार मित्रा वति कालि न्द्रि जय लक्ष्मी पदु मि
ना आर्गति साध मार ह्या ॥ द्वारिका पुरि मा नारायण ग या जो ति स्वरूपै र ह्या पाण्डव

राम

९५

साध गरि वडा हर क ले के ला वना उदा भ या ॥ ९१ ॥ द्वारिका श्री कृष्ण को पुरि वन्यो भानि त ना
रद ग या कर्जो रि परि क्रम गरि कन ता हा व तान ग र्दा भ या ॥ कन्या रत्न कं न की सुर विर
का भनी त विस्तार्क ह्या तन ले कृष्ण भजि वडा त प स ले भक्ति त ग र्दा भ या ॥ ९२ ॥ न की सुर वि
र का को हि स म य मा सहस्र क न्या थिया हा प्रा पति श्री कृष्ण हु न जु ग भ रि भनि त प्रसा र
ह्या ॥ ए ति व च न सु नि ही र च र मा ना र द्मु नि ले क ह्या कन्या देउ मा हा राज स्व चि त्त मन ले
श्री कृष्ण एक ला भ या ॥ ९३ ॥ कन्या को महि मा सु नि वडा हर प ले ना र द्मु त या रि भ या न की
सुर विर का गृ हा श्र य मा हा व ह्या कालि था ग या ॥ कन्या देउ मा हा राज स्व चि त्त मन ले श्री
कृष्ण एक ला भ या कन्या रत्न व क सहो स हा म कन व ह्या सु नि ले क ह्या ॥ ९४ ॥ ए ति व च न

भा. ग्लो. सुनिनकीसुरविरलेकोपेगन्योमन्मह. एस्तोगर्वगरिजवायकनदियो लडाईपक्रोताह
 भा. का ॥ कन्याकोतकुंभयोमुलुकमातनेलोलायायाह. जुमगहुभनिरिसकावचनेवकि
 ॥ ५ ॥ लपठायोताह ॥ ५ ॥ नकीसुरविरमाहपराक्रमिधियोमंत्रिवोलायोताह. चंचलचित्रय
 ०५० रिवडाकठिनलेविस्तार्गन्योछिन्नाह ॥ ६ ॥ जुधेकोसारादामृतयार्कनगरभनिअहोयोतां
 हा लडाईदेउ श्रीवलभइरुहमविरलाई. भनिपठायोताह ॥ ६ ॥ नकीसुरविरलेतजाई
 ५ रिसलेढेरैअगाडिसन्योभारिकोदगरितयार्कनभयोहकितविस्तार्कहो ॥ लडाईदेउव
 ललेपुग्याहमुकभनितलस्करभन्योहारिकापुरिमाजमुनानिकटमाएस्तोतमासापन्यो
 ॥ ७ ॥ लडाईगर्तभनिनकीसुरताहारलस्करचलाउदोभन्योभारिदलूनगरागरिवडाविरह ०५०

रुपग्यातकिल्लामह ॥ हाकदियोविरलेवडोरिसगरि श्रीरुहमदियोजाहजुमदियाजुम
 देउपराक्रमिभयाभनिपठायोताह ॥ ८ ॥ हारिकापुरिमानारायणधियाविचारगन्यामन्म
 हातेस्कोशब्दसुनिवरुतरिसलेलडाईदियाछिनमाह ॥ भारिलस्कररुहमकाजति
 धियाअधिपठायाताह. चक्रैवाणगरितनकीसुरकोमृत्पुकपायाछिनमाह ॥ ९ ॥
 एस्तोभुंसगरिवडोजुमभयोभनिवानासुरगयो. हज्जारुतगरिअनेकतरहलेसंश्रान
 गर्दोभयो ॥ अफे श्रीरुहमजिकापराक्रममाहातेसलेगरिक्याभयोहज्जारुतहरंग
 न्यापुतपले. रुदेतफकिंगयो ॥ १० ॥ कन्यासोहसयेनकीसुरकातंलाईदियासाधमा लडा
 ईसोगगरिवडाहरकलेपेदेगयावाटमा ॥ हारिकापुरिमानारायणगयाअकुडधि

भा. श्लो.

०६०

यासाथमाकन्यासाथरुकेलगनमाविवाहभयोरातमा॥११॥जोरासिंधुवडोपरक्रमि
थियोमुलुकतातेस्तेलियोदसहजार्पतिदेशमाजतिथियातन्लाईसासिदियो॥तले ६
श्रीकृष्णदुहाइगन्याभनिसुन्योततकिंवधंदियो
॥१२॥बंधफासिपरिउराजाजनहेरुविंतितागर्थीतौरातंकापुत्रहेरुदेकनगयाता
रान्वस्याकाजाहा॥सरंलेउभगवांगरिपुसवकोभनिताओयावाहाजीउप्राणकरुणा
हवोसप्रभभनिदंडोतगन्यापयमाहा॥१३॥हस्तिनापुरिमावडाविरहश्रीयाचणो
उधियातलेजगपगराउभनीमतगरिःश्रीकृष्णजिउहेउगया॥निम्नाकभगवनचरंवि
षयमाअसम्यगकैकोकाहहज्जारोडशअष्टानिसगमागरितनारांगया॥जगैगर्त

रामः
०६०

काहि
५

भनितारायणगयायाउधियासाथमाहस्तिनापुरिमापुगिसतगन्याभिमुखिनगयारा
ना॥जगैकोसारादमतयार्कनगरिब्रह्मापठायाताहाजोरासिंधुअधिसरिजुमदियो
भिंसिलेच्यात्पावाहा॥जोरासिंधुमन्योभनिरुकरलेभिंसिंभिन्याघर्माहाहस्तिनापुरिमा
श्रीकृष्णकाचरणमाजाईतातामेलभया॥तासिमुषगरिवडाहंकरलेलडाईविस्तार्कहा
फोयाबंधनसवराजाहंकरकामंविभाईसवगया॥१६॥राजाधर्मजुधिष्ठिरकानगरिमाअ
स्वमेदगर्दीभयाजग्यारंभगरितब्राह्मणहेरुसंकल्पवर्दीभया॥द्वारिकापुरिकासंवदे
वाकात्राविरुहसंपूर्णताहिगयाजगैसाङ्गगरिवडारिषिहंरुतिलकसेलाउदाभया॥१७
राजाएकसुसुपालथियोनगरमातश्लाडकुदिनलेछोयोरिसलेपूर्णगरिसदाहरिकनस

भा. श्लो. सगपगदोरहो॥जुगगुभतिरीसलेअधिसरिहाकिजुवापेगन्योतस्कोरीरउडाईदि
 यापुरुषलेअकालन्युपन्यो॥१॥राजाकाअश्वमेधमापदालोधिद्वकिहातीकासु
 ठकेभयासातदिनसंमवरोवरभयीआग्निताजलेरह्या॥अग्निलाईधिवकोअपच
 कनभयोबोषद्विनाकाजरह्योपांडवकावनमाबोषतलिनगयाअग्निप्रज्वाल्येभ
 या॥१॥पांडवकोवनसपरअग्निलेगरिकनसवापगरायाताहा॥पंछिकीतपतंगजति
 थियाहरंगन्यादिनाहा॥अकासाजवईन्दुलेरिसगरिवर्सादूगन्यावनमहाअर्जुनका
 एतिवानलेगरिकनछादवननायाताहा॥१॥देतैकाविश्वकर्ममाअधिपतिजोधाभया
 नकथियोतेस्लेकिर्निगरुभतिवुरुलियोपांडवकोपिछापन्यो॥थलजलोजलकोज

लेतथलनेमहलवनाउदोभयोपाण्डवकिर्तिहेरुभतिहरकलेराजादुर्योधनगयो॥
 २१॥एकमन्दिर्विचमावन्योतदिहामाअतन्तुन्दर्गरितस्कोसदसुनिवडाहरकले
 चंचलत्वभावलेगरि॥यामलाग्योसिरमावडाकठिनलेसरम्किताहापरि॥२२॥
 जलहोकिजुलियोथलमाहागयोताजलमापरिलस्करकापरिसंमलेगरिकनतेसले
 महल्लाहेन्यो॥रुकांमावसिदुर्घदापुसभयिंभनीतगालिदियो॥२३॥कलकोवीजउ
 थोतसैविषयमासुन्यातभिंसितगयादुर्योधनकनहाकदियादिनमाहागदाउठाउदा
 भया॥तेराजपहरंगरुतवललेभतिषडाभैरह्यासोपुंसभयोभनिसुन्यानारानापु
 शिभया॥२४॥मनमाकोपगरिदुसासनगयो लस्करमासामेल्भयोभिंसिलेयेतिहाक

भा. श्लो. दिया मकनता भनी तत छिंक हो ॥ तस्का भाई सवै सित मत गयो. लडा को कं सल भयो ॥
 साकुल न भनी तस कुनित त छि जा दो भयो ॥ २५ ॥ पासा कुल न भनी गया तस कुनि पांडव
 वस्या का जाहा भिं सित लाइ अधि हाक दियो रिस गरि थकि फिजा चोता हा ॥ भिं से न ले
 त ४ वडो री गिरि अधि सन्या गदात यारि गन्या तेरो प्राण हरंग रु भनि उठ्यारि से ले जाइ पन्या
 ॥ २६ ॥ पाच पाण्डव स य कुमार को अतं त जु ध्ये भयो तन्कारि सारि समा परि गयो वाजिक
 ठिंकोर हो ॥ जस्को जित हो ला अधि जु रु मा हा तस्को र जाई भयो. हान्या लेवन वास सि
 ८ उजुग भनि भनित वाचार हो ॥ २७ ॥ हाकि दाउ भे म सेन को अघी थी यो ज सो क हा पर्द
 थो मं चिताई सकुनी वडो रिस गरि सदा कपट् गार्द थो ॥ हनु जिनु क से को न रुदा वाजि पु

गद थ्यो सदर्द थो घेल बुनिस कुनि जु धि धिर कन क लिकु रावो लद थ्यो ॥ हा सि मु घ गरि दुसा
 सन वो लो मोहित भया सवता हा. हा की दाउ भे म सेन ले हा डि दिया वाजि लगायो ता
 हा ॥ पासा फेरि कुलगन्यो सकुनिले कपट् गन्या मत माहा. हा वाजि भे म सेन को रु न
 गयो र जाई कु टा यो ता हा ॥ २८ ॥ दुज्यो धन कामन मा ठो पु स भयो उठित घसी गयो.
 पांडव को वसवास पन्यो जु रु मा हा भनित त छि न कह्यो ॥ रा नि दु पति को पती हरं कत
 गरु भनित यारि भयो. भा रि दिन गर गरि कन गयो सं ग्राम गर्दो भयो ॥ ३० ॥ मं दिर मा व
 सि दु र्य दा विर ह ले वे रा ग्य धारि भयो त त न ले क ह म भ जि न व डा तर ह ले हरि व रं म गर हि
 न ॥ क जे री श्री क ह म का चर मा आप न्य आ पु क हि न. त न्का चिर व ठा इ दिया पुरुष

भा. स्तो. लेदे व्यास्त्रुपि भई न॥ ३॥ पांडको वनवास भयो तसे समय माफेरि दुर्जोधन गयो जुधि
 छिर माहाराज का अधिसरि विंति त गर्दा भया॥ देवा गत अपदाति मि कन पन्यो भेटे ग
 रि जाउ कह्यो लाह मन्दीर मा पुन्या यो तन लाई अग्नि प्रज्वाल्यो भयो॥ ३२॥ मंदिर मी अ
 ग्नि उद्यो भनिक ह्या पाण्डव ता भिन्नै र ह्या भिन्न सिद्ध कावल ले गदा कन धस्या गुफामा
 ०६० हास पयस्या॥ हे अग्निति मि जात देउ रु मु कन भनित भिन्न से न र ह्या सये ज्युति मि लाई भ
 ६ यो मदि उला भनित सामे ल भया॥ ३३॥ पांडव ले समय जिदिया भनि बुझ्या फि न्यात अग्नि
 गया पाच भाई पांडव को वडा मत भयो विराट नग मा गया॥ गुप्तावास गरित से नगर मा
 जाई त वस्ता भया आ फु भेक कन फेरित से समय मारा जा विराट छेउ गया॥ ३४॥ आ फु पे ०

रुणा जो थियो सब छेउ आ भिम्मेन ता भास्या भया से लिट्ठी भनि दुर्गदा कन भन्या सहदेउ
 गोइला भया॥ वृन्दानि सय मार ह्यात अर्जुन नर कुल सवारि भया त का वात्सल्य जुधि
 छिर भया भेके छपाई र ह्या॥ ३५॥ विराट कि नगरि विषे अधिपति कि चक्रता मंत्रि थि
 यो से लिट्ठी रूप मा कुशल कन देख्यो दगाता मन्त्रालियो॥ विराट कि हित रा नि छेउ
 मत गन्यो विवा को ईछा कह्यो से लिट्ठी ति मि आउ भनि बुझलियो जल्दी कलिया
 दियो॥ ३६॥ येति सब सुनित दुर्गदि क इन्द्र पांडव सरं मार हिन्द की चकले अपति ग
 न्यो म कन ता भनित त छिन्न कहि न॥ हँदै विंति गरि न वडा के ठिन ले सु तै ले सु छीप
 रि न् भिम्मेन को बुझलि वडा हर कले फकि त धर्मा गई न॥ ३७॥ कि चकले फेरि दु

भा. श्लो. पदाकन न्योहे सुन्दरी जाउ कछो. लाखे का कपड़ा आभूषन लियो महुल ता जाई बस्यो ॥
 अतेक चित्र विचित्र को रूप गरिकं चंपल मागयो सैलि डि कन ज प्र गरि मन मा हा अन्न
 न पुस भौर हो ॥ ३७ ॥ आ फु रूप छ पाइ भिं सिन गया सैलि डि ज ते भया कि च क काम
 ख हैरि वडा सरमले अलिक तजि क मा गया ॥ अमोल का क पडा आभूषण हे भनि ७०
 ०५०० तजादा भया देव्यारत्न मणी हिरा टल क दा पु गटे न ते श्लोक ह्या ॥ ३८ ॥ कि च क ले मन
 मा व डोरि स गरि व ले ले प न्यो वा हा जल दि हि ड् प्र टिया विषे भनि उ द्यो पा कि स मा यो
 वा हा ॥ आफे भि स से न ले व डोरि स गरि कि च क प छा न्या ता हा र गत काम सिले कि ता र राम
 कन ले घ्या फ कि त ध र्मा गया ॥ ४० ॥ व डो विर कि च क स न्या भनि न गर मा रा जा विराट् ०५००

॥ ३७ ॥ ॥ ३८ ॥ ॥ ४० ॥

ले सो ध्या क स्का कारण मा मे रो हित म न्यो भ नी त म न्मा गु न्यो ॥ सै लि डि सि त हित गरि
 स ग रुं दा का रं ते सै को प न्यो सै लि डि सै ति भै क न स ग मा हा म नि त त श्ले अ न्यो ॥ ४१ ॥
 ॥ कि च क नाम मृत क पु ग्यो म सान त ट मा अग्नि ज रा या ता हा सै लि डि क न ले ग
 या छु ल गरि मृत क प न्यो को जा हा ॥ चाल पा या भी म से न ले रि स गरि व द्दे लिय हा
 त मा वो कि दौ डि गया ते ज श्वि रूप ले पु ग्या म सान घा ट मा ॥ ४२ ॥ व द्दे का र ति रा द
 ले गरि क न ल स क र्म न्या स द ता हा अग्नि मा स मि धा ग न्या त सैन्य द ल का स धा यु ग
 न्या दि न्म हा ॥ सै लि डि स ग मा गरि क न प ति अ नु न्द व श्या का जा हा बा हें व स वि त्ता
 वि रा कि न गरि मा द र्श न्द दि ला या ता हा ॥ ४३ ॥ पों ड व का त दु र्दि न गया भनि बु न्या पा

॥ ४३ ॥

भा. स्तो. च भाई सामेल भया. ते हो वर्षाविति गया गुपतमा भनिस हटे उले कल्या. ॥ विराट् क्षेत्रमा
 सुदिकनगन्या प्रख्यात मुलुकमा भया ॥ ४४ ॥ कन्या एक बाढिया विराट् नगरिमा उत्त
 ०११० रकुमारि थिय ईत तन्ले एक स्वयंवर भजि गृहा अये मारहि नू ॥ अर्जुन का सुनको
 समेत नगरि नित कर्म गर्दि भयिन तत्का पुत्र महा परिक्षण भया भनिता कन्या गई
 १९ ईन ॥ ४५ ॥ भिस्सेन विरफि न्या तत से समय मावा जित्र संग लगारि अर्जुन रुक वढाई
 भो मुलुक मा संपूर्ण प्राणि भरि ॥ हस्तिनापुरि मा पुण्या तहर कले रह्या त विआम गरि
 भारि दम्भ गरा गरि कन गया अते कवढाई गरि ॥ ४६ ॥ पांडव को प्रवेश भयो भनिसुन्यो
 राजा दुज्यो धन गयो पाच पाण्डव कन भेट गरि कन भन्यो अपूर्व दर्शन भयो ॥ वडो क्रो

धगरि फि न्यो कठिन लोर से ले घुषुंदे गया फकि दोडि गया पुग्यो घर मा पांडव फि न्या
 को कल्या ॥ ४७ ॥ पांडव कारि सले मलिनु प्रगरि फि रि दुज्यो धंग गयो जुग गहु भनि पा
 च पांडव कन व किल पठा उदो भयो ॥ आफु रुहमजिका चरंत ल विषे दोडित जो दो
 भयो जुग गहु भगवान् रुकुम कन भया से न्ये त मा हु कल्या ॥ ४८ ॥ से न्ये दल को
 दर्शन गरु भा न गया श्री रुहम एक ला थिया ॥ जुग गहु वल दे उभनी पांडव गया ल
 डाई को विस्तार कल्या से न्ये मावल भद्र दल मुषि भया श्री रुहम एक ला रह्या ॥ ४९
 ॥ पांडव पटित ल मुषि श्री रुहम एक ले आ फे थिया वा का पोस्त केति क मा न कि
 गरि वल भद्र जि छे उ गया ॥ आसि वात गरि वडा सरमले अधिषड भै रह्या त को

भा. ग्लो.

५०

१२

०१०

होसवलभइलेभनिकह्याब्रह्मातमृत्युकभयाब्रह्माफंसिपन्योभनितिरहलेसंको
समानिरह्या.आयासैन्यजतिथियासंगमाहापातकपन्याकोकह्या॥सुतीलेवलभइ
जिगलिंगया.श्रीकृष्णजिसेउगयाब्रह्माफासिपन्याप्रभूमकनताभनिततक्षिन्क
ह्या॥नारानलेवलभइकामुखहेरिआजागन्याउसद्यहिरह्याब्रह्मणकोपन्यो
तघटियावाधर्मफिर्परि॥पोंवेतिथीगरिपातकहुदोसुभनिप्रतंजागरिगयाश्री
वलभइलेजोगान्नरियाफियातचार्धमगरि॥५३॥चार्धमावलभइजीचलिंगया
सैन्येतताहिरह्या.पोंडलेफुरुक्षेत्रमाजुरुदियासंग्रामगदीभया॥चक्रिवाणकोशा
तसैन्यविरमा.पाछितापोंडवगया.भारतभासवषेतपन्याविरहेरुदेउअंसिमात्रैर.

गम
०१२०

ह्या॥५३॥दुर्जोधंदेविभिंसितगया.सादिमावलभइजि.फिरिगया.सतिप्रतंग्याकह्या
॥भांजाकोजियमारन्याविरकोहोभनिरिसाईरह्या.सुतोनुद्धमयोभनितरिसलेष्ट
।थीवीदादीभया॥५४॥कोधुथियोवलभइकामनमाहाफिरिनाराहुउगयाविसे
रुपदर्शदियापुरुषलेगिताप्रहाईकह्या॥भारतसांगगरितसेसमयमावाजिन्नग
दीभयागज्जदियापरिसतकनजुगभोरिपोंडवनास्वर्गैभया॥५५॥कोटिदलयधुवं
सिकोजतिथियोश्रीकृष्णजितंलासाथगरिकोहिदिनमाहाब्रह्मासुनिहुउगया
॥अल्लिकाकपरापुरुषकनदिया.क्यापाउछिनयलेकह्यो.हुलेव्या.निधले
सरापुकनदिया.अवस्वमानिरह्या॥५६॥जिक्यासकलोहिया.बोदतलविषेनदि

भा. २०. किनामी गया. घोटावाण चुरंगया छिन महाजलिवगाउं दाभया. ॥ सेषथियो जतिवाण
 कोसगमाहा जलेमा फालि दिया. कोटिदल जधुवंसिका सँग गरि फिकित घसी गया
 ॥ ५७ ॥ वाली पुत्र अघित अंग दथियो पछि अजामिर्भयो व्याधा कर्म गरि सदा दिन दि
 ०१३० नैन दि कि रं मागयो. सेषथियो जतिको दोदमारि की तत लोलियो अचु कवान गरि
 वडा हरकले सि कार धेलिर हो ॥ ५८ ॥ कोटिदल जधुवंसिका सँग गरि श्री कृष्ण धेलि
 १३ र ह्या. आजु दधि क्रम गुरु भनिक ह्या जमुना किनामी गया ॥ दधि क्रंति न का परि क्रंति
 न का परि जुरु माहा सेन्ये त संच भया. एकै कृष्ण र ह्या नदी तट माहा. उदेक मानि
 र ह्या ॥ ५९ ॥ सैदल सव धेद पन्या छिन माहा श्री कृष्ण एकला भया. उपरु छि गरिन ०१३०

०१३०

दितट माहा जाई तवला भया ॥ सेन्ये का एती सो कले गरि कत वडा मलिं भैर ह्या. एतिक मरु
 न्याथियो तव भयो भनी तमत्मा गुन्या ॥ ६० ॥ अचु कवान गरित से दिन माहा फिरी अजामि
 मिर्गयो मिर्गे हो भनि वुरुलियो मत माहा धनु वडा उदो भयो ॥ वान लाग्यो श्री कृष्ण
 काध गमाहा व्याधाता मुच्छी भयो कजोरि विंति गयो चला मा व्याधा उदेका ईर ह्यो
 ॥ ६१ ॥ रामै राम भजितारा यण पन्या. सेन्ये त ताहिर ह्या. पुनस्कोत पस्या फलित रुन
 गयो स्वर्ग रोहिता गया ॥ आठ ओता हरिका वितित्कन भया वौधा कलं कीर
 ह्या हरि द्वार दोषित से समय मा. वैकुण्ठ धाम गे गया ॥ ६२ ॥ जश्लेयो हरिणाम रु
 नी घट माहा से पूजा जपै रुन. त को मुक्ती भयी हरि वरण मा दिव्या स्वस्ति पित वन ॥

श्लो. जन्मेयो महिमा पुकट् गरि करुन् सदा सुखे मारुन्. एविस व सुनिनर माहासं पण
जान्या हवन् ॥ ६३ ॥ पश्चिम वाग मती प्रवित्र जमुना पूर्व दिशा को शिका दक्षिन् च न
ती शिवालय माहा हरि लिला उच्यति ॥ उन्नम माहिम गौरी पर्वत वन्धो उच्यन्त अ
००१४०० प्रावती श्रीवृद्धाई निमायिका चर मा हरि लिला सि द्यति ॥ १ ॥ यो लिङ्ग मा भर
वी भगले प्रधातु लु क मा भ मं विता इ न र मा व स न त क वि सु क्षे वि चाले क ह्या ॥ आत
४ कु भंग वान को चर न त ल वि मा हं सदा घटे मार ह्या जन्मे रु द्ध म भ जि र हो स न र मा हा वे
कुंठ वा ति भ यती १६६ ॥ ॥ इति रु द्ध म लिला भा का म्हा क स पूर्णम् ॥ ॥ इति सं वत् १८
९९ साल मिति ज्येष्ठ वादि उरो ज द्ध मालि खित म् स म्पूर्णम् ॥ ॥ श्री रु द्ध मा य त न ॥